अगस्त १९९० हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

निस्संदेह बुद्ध होगा

बहुत-बहुत पुरानी बात है। प्रत्यंत प्रदेश का एक नगर। उन दिनों प्रत्यंत प्रदेश सरहदी प्रदेश को कहते थे। वह प्रदेश जहां अपने देश की सीमा का अंत होता है और प्रतिवेशी याने पड़ोसी देश की सीमा का आरंभ होता है।

हां, तो ऐसे प्रत्यंत प्रदेश का यह परम रमणीय नगर। नाम भी था रम्य। आज इस नगर में बड़ी चहल-पहल है। लोगों ने अपने-अपने घर झाड़-बुहार कर साफ कर लिए हैं। लीप-पोतकर नयनाभिराम बना लिए हैं। घर-घर के दरवाजों पर आम के हरे पत्तों और रंग-बिरंगे फूलों की बन्दनवारें बँधी हैं। नए कटे कदली वृक्ष के खंभे लगाए हैं, जिनमें से किसी-किसीपर केले के फूल और फल की धड़ लटक रही है। पानीभरे कलश रखे हैं, जिन पर नारियल रखे हुए हैं। नारियल के नीचे आम के लंबे पत्ते और लंबी हरी दूर्वा उनकी शोभा बढ़ा रही है। गृहणियों ने उमंगभरे मन से अपने-अपने घर-आंगन में चौक पूरे हैं। रंग-बिरंगी रंगोली द्वारा विलेपन-मंडन कला के उत्कृष्ट नमूने पेश किए हैं।

नगर के सार्वजनीन चौक में अत्यंत सुन्दर मंडप खड़ा किया गया है, जिसे विमल, कोमल, नवल नील उत्पल पुष्पों से सजाया गया है। पांच प्रकार की मांगलिक लाज-लावा भूमि पर बखेरी गयी है। मंडप पर शुभ्र-श्वेत वस्त्र का चँदोवा तना हुआ है। उसके चारों ओर सुंदर सुगन्धित फूल-पत्तों की मालाएं बँधी है। नाना रंग की छोटी-बड़ी ध्वज पताकाएं लगायी गयी हैं। नगर की पथ-पथिकाओं पर भी बहुरंगी झंडियों की बंदनवारें बँधी हैं। तोरणद्वार सजे हैं।

बच्चों और बच्चियों ने, किशोर और किशोरियों ने, युवकों और युवतियों ने अपने-अपने मनपसंद के एक से एक सुन्दर वस्त्र-आभूषण पहने हैं। नगर की सभी नर-नारियां आकर्षक परिधानों और अलंकारों से सुसज्जित हैं। मानो किसी उल्लासभरे उत्सव की तैयारियां हो रही हैं।

पिछली रात तेज वर्षा हुई थी, परिणाम स्वरूप नगर के बाहर की एक कच्ची सड़क ध्वस्त हो गयी। उस पर कहीं-कहीं खड्डे हो गए, जिनमें पानी भर गया और सड़क पर जगह-जगह कीचड़ हो गया था। बहुत से लोग समीप से पत्थर-कंकर और सूखी मिट्टी ला-लाकर उस सड़क की मरम्मत करने में लगे थे।

- "क्या आप के नगर में आज कोई उत्सव मनाया जानेवाला है?" नगर में आए हुए एक नवागन्तुक ने सड़क की मरम्मत करनेवाले एक व्यक्ति से पूछा।

- "हां भाई, स्वागत उत्सव मनायेंगें। लगता है तुम परदेशी हो। यहां के लिए अजनबी हो। तुम्हें पता नहीं। हमारे सौभाग्य से इस प्रत्यंत प्रदेश में भगवान दीपंकर बुद्ध पधारे हैं। अपने भिक्षु संघ के साथ हमारे इस रम्य नगर के बाहर सुदर्शन नामक महाविहार में टिके हैं। नगर के प्रमुख लोग कल उनके दर्शन कर आए और उन्हें आज के भोजन के लिए आमंत्रित कर आए हैं। सारा नगर उन्हीं के स्वागत की तैयारियों में लगा है। वहां उस बड़े मंडप में भोजनदान का सामूहिक आयोजन है। लोग उन्हें बुलाने गए हैं। वह यहां पधारने ही वाले हैं। इस कीचड़भरी सड़क को हमें शीघ्र सुधारना है ताकि भगवान बुद्ध और उनके भिक्षु शिष्यों को इस पर से पैदल चलने में कोई कठिनाई न हो।"

- "क्या कहते हो बुद्ध? क्या सचमुच कोई व्यक्ति बुद्ध बना है?" युवा तपस्वी ने विस्फारित नेत्रों से पूछा।

- "हां भाई, भगवान दीपंकर सम्यक्‌सम्बुद्ध बन गए हैं। क्या तम्हें इस बात की भी सूचना नहीं है? लगता है तुम सचमुच अजनबी हो।"

सचमुच वह अजनबी ही था। सुदूर देश का रहनेवाला। मध्यम देश की अमरावती नामक महानगरी में एक अत्यंत धनाढ्य ब्राह्मणकुल में जन्मा। नाम सुमेध। अनेक पूर्व जन्मों के कुशलसंस्कारोंके कारण बचपन से ही सांसारिक सुख-भोगों के प्रति अरुचि जागी। युवा अवस्था प्राप्त होते-होते एक दिन विरासत में मिली सारी धन-संपदा लोगों को बांटकर गृहत्यागी बना और सुदूर हिम प्रदेश के धम्मिक नामक पर्वत पर तप करने चला गया। वहीं तपते-तपते उसे आठों लोकीय ध्यान समापत्तियां प्राप्त हुईं। पांचों अभिज्ञान याने ऋद्धियां उपलब्ध हुईं। अपने ऋद्धिबलसे ही वह आज यहां पहुँचा था।

उसे यह जानकर अत्यंत सुखद आश्चर्य हुआ कि लोक में दीपंकर नाम के सम्यक् सम्बुद्ध उत्पन्न हुए हैं। उसका सारा शरीर सिहरन से पुलकित हो उठा।

एक बुद्ध और दूसरे बुद्ध के बीच का अंतराल इतना बड़ा होता है कि अधिकांश लोग बुद्ध शब्द ही भूल जाते हैं। अतः यह शब्द सुनना भी दुर्लभ हो जाता है। वस्तुतः किसीका बुद्धत्व प्राप्त कर लेना और ऐसे किसी बुद्ध का साक्षात्कार होना तो बहुत बड़े सौभाग्य की बात होती है। आज उसे बुद्ध का प्रत्यक्ष दर्शन होगा। इस चिंतन मात्र से युवा तापस सुमेध हर्षविभोर हो उठा।

सड़क की मरम्मत करनेवाले नागरिकों से उसने करबद्ध याचना की, "मरम्मत की जा रही इस सड़क का थोड़ा सा आगे का हिस्सा मेरे हवाले कर दिया जाय। मैं इस विषम भूमि को सम करूं। इसका कीचड़ दूर करूं। गीली को सूखी करूं। इसे भगवान के गमन योग्य बनाऊं। इस सेवा के पुण्य में मुझे भी भागीदार बनने दीजिए।"

तपस्वी सुमेध का व्यक्तित्व बड़ा भव्य था। लंबा छरहरा शरीर, गौर वर्ण, बड़ी-बड़ी तेजस्वी आंखे, रोबीला चेहरा, सिर पर काले के शोंकी लंबी जटाएं। शरीर पर बल्कल वस्त्र, काख में मृगचर्म, हाथ में कमंडल। लोग उसके भव्य आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित हुए, उसकी मांग अस्वीकार न कर सके।

सुमेध भावविभोर होकर सड़क की मरम्मत में लग गया। उसने नागरिकोंसे एक पात्र लिया। समीप से सूखी बालू भर-भर कर लाता और कीचड़भरी सड़क पर बिछाता। उसके तेजस्वी चेहरे पर श्रम-कण उभर आए और नवोदित सूर्य की प्रकाश-किरणोंमें मोतियों की तरह आभास्वर हो उठे। बुद्ध के आगमन की बात सोचते-सोचते उसका मन बांसों नाचने लगता। वह उमंगभरे उत्साह के साथ अपने काम में लग जाता।

इतने में एकाएक जनसमूह में हर्षध्वनि उठी। भन्ते भगवान पधार रहे हैं। "बुद्धं सरणं गच्छामि" का मंजुल मंगल घोष गूंज उठा। तपस्वी सुमेध का तन-मन पुलक-रोमांच से भर उठा। सचमुच सामने भगवान दीपंकर बुद्ध हैं। मन्द गति से, नपे तुले कदमोंसे समीप चले आ रहे हैं। आंखों में करुणा की अजस्र अमृतधारा बह रही है। तपस्वी इस दर्शन मात्र से धन्यता अनुभव करने लगा। परन्तु तभी उसे ध्यान आया कि सड़क का छोटा सा हिस्सा अभी बिना मरम्मत हुए ही रह गया है। वहां दलदल है, कर्दम है, कीचड़ है। भगवान और उनके भिक्षु संघ को इस कीचड़में पांव रखकर आना होगा। यह तो बहुत अनुचित होगा। उसने उस कीचड़भरे स्थान पर तत्काल अपना मृगचर्म बिछा दिया। भगवान और भिक्षुसंघ इस पर पांव रखकर आगे बढ़ें। परन्तु फिर देखा कि चार हाथ कीचड़ की जगह अभी भी बाकी रह गयी है। सुमेध ने सोचा, अरे मेरा यह शरीर किस काम आएगा? इससे अच्छा और क्या उपयोग होगा इसका? अतः

वह उस कीचड़भरे स्थान पर औधे मुँह लेट गया और अपनी जटा खोलकर आगे बिछा दी। भगवान और भिक्षु संघ इस जठा पर से चलें, मेरे शरीर पर से चलें। भले मेरे अंग क्षत-विक्षत हो जांय, पर उनके पांव में कीचड़ न लगे।

और यों कीचड़ में लेटा-लेटा सुमेध तापस चिंतन करने लगा, "मैंने ध्यान की ऊंची से ऊंची अवस्थाएं प्राप्त की हैं। सचमुच मेरे पास पर्याप्त पुण्य-पारमिताएं भी हैं और अब भगवान बुद्ध का साक्षात् सान्निध्य प्राप्त हुआ है। उनसे विपश्यना की मुक्तिदायिनी विद्या सीखकर थोड़े से परिश्रम से नितांत विमुक्त अवस्था प्राप्त कर सकता हूं। पर इससे तो केवल मेरी ही मुक्ति होगी। क्या इसी के लिए पराक्रम करूं? यह तो बड़ी ओछी बात होगी। स्वार्थभरी हीन बात होगी। नहीं, मुझे केवल अपनी मुक्ति के लिए परिश्रम नहीं करना है। मुझे इन भगवान दीपंकार की भांति सम्यक्सम्बुद्ध बनना है। भले इसमें बहुत लंबा समय लगे। अनेक कल्प लग जायं। भले इसके लिए मुझे विपुल पराक्रम-पुरुषार्थ करना पड़े। परन्तु इस प्रकार सम्यक् सम्बोधि प्राप्त करने पर मैं अनेकों की मुक्ति में सहायक बन पाऊंगा और सम्यक् सम्बोधि प्राप्त करने के लिए पारमिताओं के अधिक परिमाण में परिपुष्ट करने में जो दीर्घकाल लगेगा, उसमें भी अनगिनत लोगों को धर्म की ओर प्रवृत्त करने का ही पुण्यकार्य करता रहूंगा। मुझे इसी जीवन में मुक्ति नहीं चाहिए। मुझे सम्यक् सम्बुद्ध बनना है।"

तब तक भगवान दीपंकार बुद्ध बिल्कुल समीप आ गए। उन्होंने अधोमुख लेटे हुए तापस सुमेध की ओर देखा। "चेतोपरिञ्ञाण" की सिद्धि से अपने चित्त से उसके चित्त की स्थिति जानी और मुस्कराए। त्रिकालज्ञ भगवान ने युवा तपस्वी का भूतकाल देखा। इसके पास अनेक कल्पों की पर्याप्त मात्रा में पारमिताएं हैं। इस गृहत्यागी ने इस मनुष्य जीवन को भी सार्थक किया है। कठिन परिश्रम द्वारा आठों ध्यान समापत्तियां उपलब्ध की हैं। इस समय इसे विपश्यना विद्या मिलते ही अल्पकाल में ही यह व्यक्ति भवमुक्त अर्हंत अवस्था प्राप्त कर लेगा। भगवान ने देखा यह व्यक्ति इस समय अनेकों के हितसुख के लिए अपनी आशुमुक्ति को सहर्ष त्यागने का दृढ़ संकल्प लिए हुए है। आगामी असंख्य कल्पों तक इन्हीं पारमिताओं को बहुत बड़े परिमाण में और अधिक परिपुष्ट करने का इसका अधिष्ठान सचमुच सुदृढ़ है। यह संकल्प केवल भावावेशजन्य नहीं है। लोकहित के लिए दीर्घकाल तक कष्ट सहन करने की इसमें प्रबल क्षमता भी है। तब भगवान ने उसका भविष्य देखा और मुस्कराए। सुमेध के सिरहाने खड़े भगवान दीपंकर बुद्ध ने तब यह आशिर्वादमयी मंगल घोषणा की:

"भिक्षुओ, यह जो जटाधारी उग्र तपस्वी कीचड़ में अधोमुख लेटा है, अत्यंत श्रद्धाबहुल है, दृढ़निश्चयी है। इसने इस समय जो दृढ़ निश्चय किया है, यह इसके लिए बोधि का बीज बना है। यह बुद्धांकुर बोधिसत्व अदम्य उत्साह के साथ जन्म-जन्मांतरों में अपनी पारमिताओं को अत्यंत प्रबल-पुष्ट करता हुआ, अनेकों प्राणियों को धर्मपथ पर प्रेरित करता रहेगा और चार असंङ्ख्य और एक लाख कल्प पूरे होने पर सिद्धार्थ गौतम नामक सम्यक् सम्बुद्ध बनेगा।"

भगवान का आशिर्वादमय दाहिना हाथ उठा और मेघ गर्जना की सी मोदभरी वाणी में उन्होंने कहा, "धुवं बुद्ध भविस्ससि।" निस्संदेह यह व्यक्ति बुद्ध बनेगा।

सारे वातावरण में यह बुद्धवाणी गूंज उठी। लोक-लोकान्तरों के असंख्य चक्रवालों से इस बुद्धवाणी की प्रतिध्वनि गूंज उठी:

धुवं बुद्ध भविस्ससि!

धुवं बुद्ध भविस्ससि!!

धुवं बुद्ध भविस्ससि!!!

कल्याण मित्र,

स.ना.गो.